कक्षा-10

मन्थनम्

द्वितीयो भागः

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण : 2014

मूल्य : ₹ 38.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना - 800 001 द्वारा प्रकाशित तथा बल्लू बाईंडिंग हाउस, पटना कोल्ड स्टोरेज, पटना-800006 द्वारा 5000 प्रतियाँ मुद्रित ।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल 2013 से राज्य के कक्षा IX एव X हेतु ऐच्छिक विषयों का पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस संदर्भ में एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना द्वारा विकसित प्रस्तुत पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की जा रही है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार श्री जीतन राम मांझी, शिक्षामंत्री, श्री वृशिण पटेल एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री आर०के० महाजन के मार्गदर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना के निदेशक के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया ।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके ।

दिलीप कुमार, आई०टी०एस०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०,

संस्कृत पाठ्यचर्या निर्माण समिति

1. अमरजीत सिन्हा : प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना
2. राहुल सिंह : राज्य परियोजना निदेशक, बिहार माध्यमिक शिक्षा परिषद्, बिहार, पटना
3. हसन वारिस : निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना
4. डॉ॰ सैय्यद अब्दुल मुईन : विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना
5. डॉ॰ ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी : सदस्य, पाठ्यक्रम सह पाठ्य-पुस्तक विकास समिति, बिहार, पटना

अध्यक्ष – डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
(राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)

समन्वयक – डॉ. रीता राय, व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना

लेखक सदस्य :

1. **डॉ. मधु बाला सिन्हा**
सहायक प्रोफेसर (संस्कृत), राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, काजीपुर, पटना ।

2. **श्री शंभू राय**
सहायक शिक्षक (संस्कृत), राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय,
गुलजारबाग, पटना सिटी, पटना –7

3. **डॉ. शहिद आलम**
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सुन्दरपट्टी, पकड़ीदयाल, पूर्वी चम्पारण ।

4. **डॉ. बिभाष चन्द्र**
सहायक शिक्षक (संस्कृत), शहीद राजेन्द्र प्रसाद सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
(पटना हाई स्कूल), गर्दनीबाग, पटना–2

5. **श्रीमती प्रियंका**
सहायक शिक्षिका (संस्कृत), अनुग्रह नारायण सर्वोदय उच्च विद्यालय, उसफा, पटना ।

संस्कृत पाठ्य-पुस्तक समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य

डॉ. रामगुलाम मिश्र
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. अशोक कुमार
प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना

पुरोवाक्

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं चैव संस्कृतिः

पुस्तकमिदं राष्ट्रियपाठ्यचर्यायाः रूपरेखां (2005 ई०) किञ्च बिहारपाठ्यचर्यायाः रूपरेखां (2008 ई०) मनसिकृत्य नवीनं पाठ्यक्रमम् आश्रित्य प्रस्तुतं वर्तते । पुस्तकनिर्माणे शिक्षायाः निम्नाङ्कितं तात्पर्यं सम्यक् विचारितमस्ति । तथाहि - शिक्षायाः मौलिकः अर्थः विद्यालयशिक्षार्थिनां तादृशं क्षमत्वं वर्तते यत् ते स्वजीवनस्य यथार्थम् उद्देश्यं जानीयुः, स्वस्य सकलयोग्यतानां समुचितं विकासं कुर्युः, जीवनस्य लक्ष्यं निरूपयेयुः तथा तल्लब्धुं यथाशक्यं सार्थकं प्रभावकं च प्रयासं कुर्युः । अपि च इदमपि ज्ञातुं क्षमाः स्युः यत् समाजस्य अन्येऽपि जनाः तादृशमेव कर्तुं पूर्णमधिकारं धारयन्ति । उपर्युक्तं रूपरेखाद्वयम् अस्मान् ज्ञापयति यत् शिक्षार्थिनः विद्यालयजीवने बहिरङ्गजीवने च न भवेत् किमपि अन्तरालम् । पुस्तकसंसारः बाह्यसंसारश्च परस्परं ग्रथितौ स्याताम् ।

पुस्तकेऽस्मिन् शिक्षार्थिनां कल्पनाशक्तिविकासः, तेषां गतिविधीनां रचनाशीलता, प्रश्नान् कर्तुम् उत्तराणि च प्राप्तुं तेषां मौलिकाधिकारस्य समुचितं संरक्षणं, ताँश्च रचनात्मिकां दिशं प्रवर्तयितुं सुतरां प्रयासः वर्तते । नूनमस्मिन् शिक्षार्थिभिः सह शिक्षकाणामपि संलग्नता भवेत् । छात्रान् प्रति संवेदना-सहानुभूतिभ्यां सह तैरपि पुस्तके सक्रियः सहभागो वर्तनीयः ।

साम्प्रतं संस्कृतभाषायाः तस्यां रचितस्य वाङ्मयस्य च महत्त्वं सर्वत्र स्वीक्रियते । ज्ञानविज्ञानक्षेत्रेषु असंख्याः ग्रन्थाः तस्यां विराजन्ते । अस्मिन् विज्ञानप्रवाहमण्डितेऽपि काले

संस्कृतस्य महत्त्वं न न्यूनीकृतमस्ति, यतः इयमेव प्राचीनतमा भाषा नवीनानपि विषयान् आलिङ्ग्य निरन्तरं प्रवर्तते । अस्याः भाषायाः व्यापकत्वं संगणकयुगे सुतराम् अनुभूयते, यतः कोटिशः पारिभाषिकान् शब्दान् जनयितुं सामर्थ्यम् अस्यामेव भाषायां वर्तते नान्यत्र ।

संस्कृतभाषायाः शिक्षणं भारते वर्षे विविधैः प्रकारैः भवति । प्रायशः सर्वेषु भारतीयराज्येषु विद्यालयस्तरेण संस्कृतभाषायाः शिक्षणं दृश्यते । किन्तु विषयवस्तुनिरूपणे पाठ्यक्रमस्य छात्र-परिवेशस्य च अन्तरालं विपुलमासीत् इति राष्ट्रियपाठ्यचर्यायां तस्य निराकरणं प्रतिज्ञातम् । तदाश्रितानि पाठ्यपुस्तकानि परिवेशस्य संग्रहणमपि स्वीकुर्वन्ति । संस्कृतविषयस्य अनुशीलने बिहारराज्येऽपि राष्ट्रियपाठ्यचर्यायाः अनुसरणं भवेदिति अस्माकं संकल्पः । ततः छात्रकेन्द्रिता शिक्षाव्यवस्था अत्रापि प्रवर्तते ।

अस्माकं प्रयासः तदैव संफलीभवेत् यदा विद्यालय-प्राचार्याः शिक्षकाः अभिभावकाश्च विषयेऽस्मिन् सहयोगिनः स्युः । एते सर्वेऽपि छात्रान् स्वानुभवेन ज्ञानार्जनाय, कल्पनाविकासाय, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रेरयेयुः । यदि च अनुकूला सुरुचिपूर्णा पाठसामग्री प्रस्तूयेत, तदा छात्राः परिवारस्य अग्रजैः अभिभावकैः, विद्यालयस्य च शिक्षकैः प्रदत्तस्य स्वानुभूतज्ञानेन आत्मनः पूर्वार्जितं ज्ञानं संयोज्य किमपि योग्यतरं नवीनं ज्ञानं प्राप्नुयुः । एवमेव परीक्षायाः आधारोऽपि व्यापकः स्यात् । पुस्तकाधारितं ज्ञानमेव न पर्याप्तं प्रत्युत छात्रस्य सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च विकासः अपि तत्र अनिवार्यतया ग्रहणीयः । अनेन क्रमेण शिक्षणप्रक्रियायां छात्राः अपि प्रतिभागिनः भवन्ति इति न सन्देहः ।

राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य विशेषस्थितेश्च दृष्ट्या तथाभूतानि पाठ्यपुस्तकानि

अस्माभिः निर्मितानि यत्र उपर्युक्तः सर्वोऽपि कार्यक्रमः अङ्गीभूतः । संस्कृतशिक्षायाः नवमकक्षायाः कृते ऐच्छिक-विषयरूपेण पाठ्यपुस्तकमिदं छात्रेभ्यः चिन्तनस्य उत्सुकतावृद्धेः लघुसमूहेषु वार्तायाः कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च पर्याप्तम् अवसरं प्रदास्यति । यथापूर्वम् इहापि द्रुतवाचनाय अनुपूरकसामग्री प्रदत्ता ।

बिहारराज्यशैक्षिकानुसन्धान प्रशिक्षण-परिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृतपाठ्यपुस्तक-विकाससमितेः अध्यक्षाय विद्वद्वरेण्याय डा. उमाशंकरशर्मणे तत्सहायकेभ्यः प्रतिभागिभ्यश्च भूरिशः साधुवादं वितरति स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति ।

प्रवर्ततां पुस्तकमिदं संस्कृतहिताय ।

हसन वारिस

निदेशकः

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहारः

◆◆◆

भूमिका

आज संसार की समस्त उपलब्ध भाषाओं में सर्वाधिक प्राचीन तथा सबसे लम्बी ऐतिहासिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परम्परा की भाषा संस्कृत ही है । ऋग्वेद के समय से अद्यावधि निरन्तर इसका वाचिक-साहित्यिक प्रयोग होता रहा है । भारत की विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं का वहन इसके ग्रन्थों द्वारा होता रहा है । भारतीयों के हृदय में श्रद्धा तथा आदर का भाव धारण करने वाली यह भाषा विदेशी विद्वानों के द्वारा भी पर्याप्त समादृत हुई है । संस्कृत के पठन-पाठन की व्यवस्था भारत के प्रायः सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में वर्तमान है तथा विदेशों में भी प्राच्य विद्या या भारतीय विद्या के अन्तर्गत इसके अनुशीलन की मौलिक व्यवस्था है । भारत की बंगला, उड़िया, असमिया, हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, डोगरी, नेपाली आदि भाषाएँ संस्कृत से साक्षात् निकली हैं । दक्षिण भारतीय भाषाएँ भी अपनी शब्द-सम्पत्ति के लिए संस्कृत पर विपुल रूप से आश्रित हैं ।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में संस्कृत का भाषाशास्त्रीय उपयोग व्यापक रूप से दिखाई पड़ता है । ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय भाषाएँ उनके सिद्धान्तों की व्याख्या करती हैं जबकि पारिभाषिक शब्दावली के लिए उनमें संस्कृत का आधार ही आलोकस्तम्भ है । भारत की बहुभाषिकता में विभिन्न भाषाओं के मौलिक सेतु के रूप में संस्कृत ही एक मध्यस्थ भाषा का काम करती है । भाषाओं के बीच अनुवाद का कार्य संस्कृत को आधार बनाने से सरल हो जाता है ।

संस्कृत में शब्द-निर्माण की क्षमता संसार की सभी भाषाओं से अधिक है । हजारों

धातुओं, प्रत्ययों, उपसर्गों तथा उनसे सम्बद्ध अर्थों की व्यवस्था इसमें इतनी वैज्ञानिक है कि कोई भी नवशिक्षार्थी अपनी सुविधा के अनुसार हजारों नवीन शब्दों की रचना कर सकता है । इसलिए आज विश्वभर में पारिभाषिक शब्दावली के लिए भविष्य का विज्ञानजगत् संस्कृत की ओर उन्मुख है । उपसर्गों और प्रत्ययों के योग से एक-एक धातु से सैकड़ों शब्द बन सकते हैं । फिर भी आज के भौतिकता-प्रधान बाजारवाद से प्रभावित युग में संस्कृत को पहले की अपेक्षा अनेक संघर्ष और प्रतिघात झेलने पड़ रहे हैं । किन्तु इसकी मौलिक जीवनी शक्ति इतनी प्रबल है कि नयी-नयी साहित्यिक-शास्त्रीय रचनाओं के अंकुर तथा प्रवाल निरन्तर फूटते रहते हैं । पिछले एक सौ वर्षों में जितनी संस्कृत रचनाएँ हुई हैं वे इसका मुखर प्रमाण हैं । भारत के सभी राज्यों में संस्कृत रचनाएँ हो रही हैं, यह संस्कृत शिक्षा का सर्जनात्मक परिणाम है । पूरे राष्ट्र का (केवल एक क्षेत्र या प्रान्त का नहीं) प्रतिनिधित्व संस्कृत भाषा के ही द्वारा सम्भव है । हमें ज्ञात है कि संस्कृत भाषा में लिखे गये पुराणों ने सम्पूर्ण भारत-राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता का व्यापक प्रमाण दिया है जिससे भारत की सांस्कृतिक एकता आज भी सुरक्षित है अन्यथा राजनीति और क्षेत्रीय स्वार्थवश भारत अनेक खण्डों में रह जाता ।

किसी भी आधुनिक सम्पन्न भाषा में जो विशेषताएँ, जैसा साहित्यसर्जन और जिस प्रकार वैविध्य हो सकता है वह सब संस्कृत में विद्यमान है । विद्वानों का एक समृद्ध वर्ग स्वीकार करता है कि संगणक (Computer) के लिए भावी भाषा के रूप में संस्कृत में अपार सम्भावनाएँ हैं । परिणामतः भौतिकवादी युग भी संस्कृत के महत्त्व की उपेक्षा नहीं कर सकता । प्राचीनता और आधुनिकता का समन्वय संस्कृत में बहुत तेजी से हो

रहा है । संस्कृत द्वारा हम अपनी प्राचीन संस्कृति के गौरव को तो जान ही सकते हैं आधुनिक विषयों को भी इसके द्वारा आत्मसात् कर सकते हैं । अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा की अपेक्षा यह अपने देश की प्राचीनतम सांस्कृतिक भाषा है । अत: इसके अनिवार्य अनुशीलन की आवश्यकता है ।

ऊपर कहा गया है कि भारत की बहुभाषिकता की दृष्टि से संस्कृत का उपयोग है । बिहार राज्य के सन्दर्भ में यह बहुभाषिकता मैथिली, भोजपुरी, मगही एवं उनकी अंगरूप (अंगिका वज्जिका आदि) भाषाओं तक सीमित है । ये भाषाएँ संस्कृत से तद्भव रूप में ही सही, अपनी शब्दसम्पत्ति, व्याकरण तथा वाक्यरचना को साक्षात् ग्रहण करती हैं । इसलिए बिहार के परिवेश में संस्कृत के अनुशीलन का अत्यधिक महत्त्व है ।

संस्कृत का नवीन पाठ्यक्रम राष्ट्रिय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005 ई.) के आलोक में ही हमलोगों ने प्रस्तुत किया है जिसमें शिक्षा को मुख्यत: आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में प्रस्तुत करना प्रतिज्ञात है तथा कण्ठाग्र करने की परम्परागत पद्धति से हट कर छात्रों को स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रेरित करने का उद्देश्य रखा गया है । नवम कक्षा में ऐच्छिक विषय के रूप में जो संस्कृत रखी गयी है वह विभिन्न लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक है । मुख्य संस्कृत विषय के समान इसमें भी प्रत्येक पाठ विविध उपकरणों से समन्वित है जैसे शब्दार्थ, व्याकरण, लिखित तथा मौखिक अभ्यास एवं योग्यता-विस्तार ।

दशम कक्षा के लिए प्रस्तुत संस्कृत (ऐच्छिक) की यह पुस्तक भी नवम कक्षा के समान आठ मूल पाठों से युक्त है किन्तु इसमें द्रुतवाचन के लिए तीन पाठ दिये गये

हैं । मूल पाठों में चार गद्यात्मक तथा चार पद्यात्मक हैं । इन पाठों में विभिन्न रुचियों तथा विषयों का समाकलन हुआ है । गद्य पाठों में प्रथम **प्रजातन्त्रम्** है जो आज की प्रसिद्ध शासन-पद्धति का परिचय देता है । दूसरा पाठ **लक्ष्यैकदृष्टिः** है जिसमें एक मण्डूक की कथा द्वारा यह संदेश दिया गया है कि जीवन के किसी काम में लक्ष्य पर ध्यान रखने से सफलता मिलती है । तीसरा गद्य पाठ नाटकात्मक है जिसका शीर्षक **वणिग्वैद्ययोः वार्तालापः** है । इसमें दिखाया गया है कि लोक में जो प्रवाद फैलता है, वास्तविकता वैसी नहीं होती । सुख-दुःख में सभी सहभागी और समान हैं । चौथा गद्य पाठ भारत के प्रथम राष्ट्रपति के जीवन-परिचय से सम्बद्ध **डॉ॰ राजेन्द्र प्रसादः** है ।

पद्य पाठों में **सुभाषितानि** संस्कृत के कुछ सुभाषित श्लोकों का संग्रह है जो जीवन के विभिन्न स्तरों में मार्गदर्शक हैं । दूसरा पद्य पाठ **वनस्पति-परिचयः** है जिसमें सात लाभदायक वनस्पतियों का सरल श्लोकों में वर्णन है । तीसरा पद्य पाठ **दिवास्वप्नः** है जिसमें पञ्चतन्त्र की एक प्राचीन कथा का पद्य में पुनः पाठ प्रस्तुत किया गया है । इसमें सन्देश है कि अनर्गल तथा असंभव चिन्तन न करके संभाव्य विषयों पर ही ध्यान केन्द्रित करें । अन्तिम पद्य पाठ **विभक्तिश्लोकाः** है जिसमें प्रथमा से लेकर सप्तमी विभक्ति तक के शब्दों का एक-एक श्लोक में संचयन किया गया है । यह छात्रों के लिए मनोरंजक होगा ।

द्रुतवाचन के अन्तर्गत तीन पाठों में राजगृह का परिचय, हास्यपूर्ण कथानक एवं छात्रों की दिनचर्या से सम्बद्ध मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री दी गयी है ।

व्याकरण एवं रचना भाग में नवम कक्षा से विषयवस्तु को आगे बढ़ाते हुए

सन्धि, शब्दरूप, धातुरूप, कारक तथा विभिन्न प्रत्ययों का परिचय दिया गया है । पुनः कुछ आदर्श निबन्ध और पत्रलेखन के ढाँचे भी दिये गये हैं जिनसे छात्र अपनी रचनात्मक शक्ति का विकास कर सकें ।

पाठ्यपुस्तक को यथासाध्य उपयोगी बनाया गया है । विभिन्न कार्यशालाओं में प्रतिभागियों ने परिश्रमपूर्वक सामग्री का चयन, लेखन तथा परिष्कृति का सफल प्रयास किया है । छात्रों की रुचि संस्कृत में बढ़े इसका पूरा ध्यान रखा गया है । यदि इससे छात्रों में संस्कृत समझने, बोलने और लिखने की प्रवृत्ति बढ़े तो हम अपना प्रयास सार्थक समझेंगे ।

उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
अध्यक्ष
संस्कृत पाठ्य-पुस्तक विकास-समिति

♦♦♦

विषयानुक्रमणिका

क्रः	पाठः	पृष्ठाङ्काः
	(क) प्रस्तावना	3-7
	(ख) भूमिका	8-13
	(ग) मङ्गलम्	14-15
1.	प्रजातन्त्रम्	16-28
2.	सुभाषितानि	29-40
3.	लक्ष्यैकदृष्टिः	41-53
4.	वनस्पतिपरिचयः	54-63
5.	वणिग्वैद्ययोः वार्त्तालापः	64-82
6.	दिवास्वप्नः	83-94
7.	डॉ. राजेन्द्रप्रसादः	95-109
8.	विभक्तिश्लोकाः	110-119
	द्रुतवाचनम्	**120-153**
1.	राजगृहम्	120-127
2.	हास्यकणिकाः	128-140
3.	छात्रचर्या	141-153
	व्याकरणं रचना च	**154-181**
(क)	सन्धिः - हल्सन्धिः, विसर्गसन्धिः	154-160
(ख)	शब्दरूपाणि	161-164
(ग)	धातुरूपाणि	165-171
(घ)	कारकाणि	172-174
(ङ)	प्रत्ययाः	175-181
	निबन्धाः /पत्रलेखनम्	**182-192**

मङ्गलम्

1. यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः ।
   यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ॥ (अथर्ववेद 12.1.3)

2. यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः ।
   या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु ॥2॥ (अथर्ववेद 12.1.4)

3. जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम् ।
   सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥3॥ (अथर्ववेद 12.1.45)

1. जिस (भूमि) में महासागर, नदियाँ और जलाशय (झील, सरोवर आदि) विद्यमान हैं, जिसमें अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ उपजते हैं तथा कृषि, व्यापार आदि करनेवाले लोग सामाजिक संगठन बना कर रहते हैं (कृष्टयः सं बभूवुः), जिस (भूमि) में ये साँस लेते (प्राणत्) प्राणी चलते-फिरते हैं, वह मातृभूमि हमें प्रथम भोज्य पदार्थ (खाद्य-पेय) प्रदान करे ।

2. जिस भूमि में चार दिशाएँ तथा उपदिशाएँ अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ (फल, शाक आदि) उपजाती हैं, जहाँ कृषि-कार्य करने वाले सामाजिक संगठन बनाकर रहते हैं, (कृष्टयः सं बभूवुः), जो (भूमि) अनेक प्रकार के प्राणियों (साँस लेने वालों) तथा चलने-फिरने वाले जीवों को धारण करती है, वह मातृभूमि हमें जौ आदि लाभप्रद पशुओं तथा खाद्य पदार्थों के विषय में सम्पन्न बना दे ।

3. अनेक प्रकार से विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले तथा अनेक धर्मों को मानने

वाले जन-समुदाय को, एक ही घर में रहने वाले लोगों के समान, धारण करने वाली तथा कभी नष्ट न होने देनेवाली (अनपस्फुरन्ती) स्थिर - जैसी यह पृथ्वी हमारे लिए धन की सहस्रों धाराओं का उसी प्रकार दोहन करे जैसे कोई गाय बिना किसी बाधा के दूध देती हो ।

♦♦♦